

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान), भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, जो पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद् है, के अधीन आठ संस्थानों में से एक है। संस्थान का उद्देश्य उष्ण शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र पर विशेष जोर देने के साथ राजस्थान, गुजरात और दादर एवं नागर हवेली में जैवविविधता का संरक्षण करना और उत्पादकता एवं वनस्पति आवरण बढ़ाने के लिए वानिकी और सम्बद्ध क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान करना और अधिदेश दिए गए क्षेत्र में अंतिम उपभोक्ताओं के लिए प्रौद्योगिकियां विकसित करना भी है। संस्थान के प्रमुखता वाले क्षेत्र में शामिल हैं : मृदा, जल और पोषक प्रबंध, दबाव स्थलों के वनीकरण के लिए प्रौद्योगिकियां, रोपणों का प्रबंध, वृद्धि और उत्पादन मॉडलिंग, रोपण स्टॉक सुधार, जैव उर्वरक एवं जैव पीड़कनाशी, कृषिवानिकी, संयुक्त वन प्रबंध एवं विस्तर, फोटोकैमिस्ट्री और गैर प्रकाष्ठ वन उपज, एकीकृत नाशीजीव एवं रोग प्रबंध और वानिकी शिक्षा।

वर्ष 2005-2006 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : ऐकेशिया निलोटिका और एलन्थस एक्सल्सा पर उद्गमस्थल परीक्षण (ए एफ आर आई-40/एफ जी टी बी/1994-2006)

उपलब्धिया : ऐकेशिया निलोटिका : परीक्षण के लिए देश के विभिन्न कृषि जलवायवीय क्षेत्रों से 28 उद्गमस्थलों के बीज एकत्र किए गए। बीज आकारिकी और अंकुरण अध्ययन किए गए और प्रत्येक उद्गमस्थल के लिए अंकुरण प्रतिशत, अंकुरण ऊर्जा और ऊर्जा अवधि के परिकलन हेतु रोजाना प्रेक्षण अभिलिखित किए गए। विभिन्न उद्गमस्थलों के वृक्ष वृद्धि अभिलक्षणों के लिए पैरामीटरों को प्रारम्भ में छः माह के अन्तराल पर और बाद में सालाना आधार पर अभिलिखित किया गया। पहले साल वृक्ष ऊँचाई 4459 सेमी से 7253 सेमी और आठवें साल में 38600 सेमी से 270 सेमी रही। ऊँचाई की रैकिंग भी एक साल से दूसरे साल अलग-अलग थी, केवल गुड़गांव ऐसा उद्गमस्थल है जो परीक्षण शुरू होने से पहले तीन के तहत आया इसके बाद, आगरा, इटावा, हस्तिनापुर, अलीगढ़, हल्द्वानी और झाबुआ रहे। चारे के रूप में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न उद्गमस्थलों के खनिज मान भी आंकलित किए गए। फॉस्फोरस 452230 पी पी एम से 184930 पी पी एम; नाइट्रोजन 32332 पी पी एम से 565650 पी पी एम; मैग्नीज 30840 पी पी एम से 6560 पी पी एम और कॉपर 7190 पी पी एम से 2120 पी पी एम है।

एलन्थस एक्सल्सा : बीज लम्बाई, बीज चौड़ाई और परीक्षण भार के संदर्भ में विभिन्न उद्गमस्थलों के बीजों के आकारिकीय लक्षणों को अभिलिखित किया। उच्चतम परीक्षण भार जोधपुर उद्गमस्थल में अभिलिखित किया गया, जो 120 ग्रा था इसके बाद क्रमशः 1058 ग्रा और 1051 ग्रा का जोधपुर और काजीपेट का रहा। निम्नतम परीक्षण भार 555 ग्रा बिलासपुर के उद्गमस्थल से अभिलिखित किया गया। काजीपेट से उद्गमस्थल में बीज लम्बाई उच्चतम (66+05 सेमी) थी। अन्य उद्गमस्थल की बीज लम्बाई 560 से 252 सेमी तक थी। अधिकतम बीज चौड़ाई बीकानेर उद्गमस्थल से थी, जो 146+17 सेमी थी और बिलासपुर उद्गमस्थल की न्यूनतम 078+01 सेमी थी। विशेषकर बालाघाट के उष्ण शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्र में अंकुरण प्रतिशत 507 प्रतिशत था। इस क्रम में अगला जोधपुर उद्गमस्थल था : जहां 401 प्रतिशत अंकुरण प्रतिशतता थी। कमजोर अंकुरण प्रदर्शन जयपुर उद्गमस्थल (041%) प्रदर्शित किया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 2 : हस्तशिल्प तथा अन्य लघु पैमाने के उद्योगों की उपयुक्तता के लिए गैर-परम्परागत, कम विदोहित स्थानीय रूप से उपलब्ध प्रकाष्ठ प्रजाति पर फसल कटान बाद प्रौद्योगिकियों पर अध्ययन (ए एफ आर आई-51 / एन डब्ल्यू एफ पी / 2002-2006)

उपलब्धियां : तीन प्रजातियों के लिए परिरक्षक उपचार और संशोधन सारणी विकसित की गई। प्रोसोपिस जूलिफ्लोरा काष्ठ अच्छा घुमाव, परिष्करण और पालिश गुण प्रदर्शित करता है। ऐकेशिया टॉर्टिलिस काष्ठ अच्छे घुमाव, उत्कीर्णन, परिष्करण और पालिश गुणों वाले स्पष्टतया अच्छे रेश पैटर्न के साथ साधारण कठोर और भारी है। काष्ठ अवनति एजेन्टों के प्रति यह काष्ठ अत्यधिक संवेदनशील है। उपचारोपरांत इस काष्ठ ने कीट छेदक और कवक आक्रमण का प्रतिरोध किया है। ऐकेशिया टॉर्टिलिस और प्रोसोपिस जूलिफ्लोरा की तुलना में पी सिमरेरिया प्रजाति साधारण से अल्प परिष्करण और पालिश गुणों वाली है। प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा को उचित प्रबंध द्वारा साफ तना वृक्ष के रूप में उगाया जा सकता है। इस काष्ठ की गुणवत्ता डैल्बर्जिया सिस्सू के समान है।

परियोजना 3 : राजस्थान और गुजरात राज्यों में चन्दन आबादी का सर्वेक्षण और अन्तःकाष्ठ मात्रा तथा तेल मात्रा का मूल्यांकन (ए एफ आर आई-52 / एन डब्ल्यू एफ पी / 2002-2006)

उपलब्धियां : राजस्थान राज्य में सर्वेक्षण के दौरान चन्दन आबादी, अन्तःकाष्ठ एवं तेल मात्रा के आँकड़े एकत्र करके संकलित और विश्लेषित किया। राजस्थान के वृक्षों में तेल मात्रा 09 से 30 प्रतिशत के बीच है। कृषि/फार्मभूमियों पर उगे वृक्षों की अपेक्षा प्राकृतिक रूप से उगे वृक्षों में अन्तःकाष्ठ मात्रा बेहतर पाई गई।

परियोजना 4 : उत्तर-दक्षिणी राजस्थान में प्रोसोपिस सिनरेरिया के मर्त्यता कारकों की पहचान और इनकी उपयुक्त प्रबंध रणनीतियों का विकास (ए एफ आर आई-46 / एफ पी / 2001-2005)

उपलब्धियां : राजस्थान के चार उत्तर-पश्चिमी जिलों में खीजरी मर्त्यता की अधिकतम प्रतिशतता क्रमशः 3630, 4278, 4100 और 3769 होने के रूप में अभिलिखित की गई। अधिकतम मर्त्यता 71-100 सेमी घेरा श्रेणी में देखी गई जिसमें 2122 वृक्ष मर गए इससे बाद 31-70 सेमी घेरा श्रेणी में 1570, 101-130 सेमी में 850, 21-29 सेमी में 700, 131-160 सेमी में 165 और 161 सेमी तथा इससे अधिक घेरा श्रेणी में केवल 47 रहे।

राजस्थान में जल स्तर की लगातार कमी; ट्यूबवैलों की बढ़ती संख्या अथवा भूजल का अति दोहन; कम वर्षा का प्रभाव; मृदा गुणों और कृषि पद्धतियों में परिवर्तन तथा वृक्षों की अति परिपक्वता कुछ अनुमानित कारक हैं, जो राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में खीजरी की मर्त्यता में अपनी भूमिका अदा करते हैं।

परियोजना 5 : राजस्थान एवं गुजरात में सतत संयुक्त वन प्रबंध के लिए मुख्य सूचकों एवं उपयुक्त रणनीतियों के पहचान (ए एफ आर आई-53 / ए एफ ई / 2002-2007)

उपलब्धियां : आबादी की सजातीयता : गांवों के सजातीय जाति संयोजन लगभग एक समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के कारण अधिक सफलता सुनिश्चित करते हैं।

समीपवर्ती वन पर निर्भरता : संयुक्त वन प्रबंध ऐसी जगह सफल है, जहां ग्रामीणों अथवा जे एफ एम सी का बड़ा भाग ईंधन काष्ठ एवं चारे की अपनी दैनिक आवश्यकता के लिए समीपवर्ती आम वन पर पूरी तरह अथवा आंशिक रूप से निर्भर है।

गौण वन उपज की उपलब्धता एवं मुक्त संग्रहण : संयुक्त वन प्रबंध की सफलता में गैर-काष्ठ वन उपज की मुख्य भूमिका है। यह औषधीय जड़ी-बूटी, तेंदुपत्तों, वन बीजों, महुवा फूलों, आंवला फलों और ऐकेशिया गोंद के संग्रहण द्वारा रूपये 10,000 से 15,000 प्रति मौसम तक आय देता है।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

संयुक्त वन प्रबंध पर साधरता दर का सकारात्मक प्रभाव होता है : निम्न साक्षरता दर के साथ ।

सूक्ष्म-योजना और स्थल अवस्था : सफलता की मात्रा सकारात्मक रूप से सूक्ष्म योजना एवं स्थल अवस्था के साथ संबंधित पाई गई ।

आर्थिक स्तर : निम्न आय वाले लोग संयुक्त वन प्रबंध से संबंधित कार्यकलापों को करने में ज्यादा इच्छुक थे ।

जागरूकता एवं विस्तार : लोगों में जागरूकता में वृद्धि होने के साथ ज्यादा क्षेत्रों को रोपण के तहत लाया गया और पूर्व रोपणों की सुरक्षा की गई ।

ग्रामीणों के साथ वन कार्मिकों का सम्पर्क : वन कार्मिकों का व्यवहार संयुक्त वन प्रबंध में लोगों को प्रभावित एवं शामिल करने में सकारात्मक भूमिका अदा करता है ।

निधियों का पर्याप्त एवं समय पर प्रवाह : जे एफ एम सी बढ़ने के साथ निधीयन के लिए संसाधन की कमी होने लगी है । अधिकांश नयी जे एफ एम सी के पास पर्याप्त धन नहीं है । धन का समय पर अवमुक्तन भी एक समस्या है ।

महिलाओं पर जोर देने के साथ स्वयं सहायता समूह : विशेषकर महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित करके सूक्ष्म-ऋण एवं सूक्ष्म उद्यम हेतु आवर्ती निधियों के साथ सृजित स्वयं सहायता समूहों ने प्रभावी परिवर्तन किया ।

वन कार्मिकों की प्रेरणा, सम्मान एवं क्षमता निर्माण : प्रशिक्षण एवं प्रेरणा द्वारा सरकारी अधिकारियों एवं क्षेत्र कार्यकर्ताओं में व्यावहारिक परिवर्तन आवश्यक है क्योंकि यह प्रशासन एप्रोच की अपेक्षा वन प्रबंध के लिए सहभागी एप्रोच को अपनाने में इनके विचारों में परिवर्तन लाता है ।

परियोजना 6 : वी ए एम / जैवउर्वरकों द्वारा प्रोसोपिस सिनरेरिया को वृक्ष उत्पादकता सुधारने पर अध्ययन (ए एफ आर आई-47 / एफ पी / 2002-2006)

उपलब्धियां : अधिकतम संख्या में ए एम कवकी प्रजाति की पहचान जोधपुर से की गई जबकि जैसलमेर से केवल 13 प्रजातियों को अभिलिखित किया गया । वर्षा के बाद अधिकतम बीजाणु आबादी और गरमी में न्यूनतम अभिलिखित की गई । जोधपुर में अधिकतम जीवाणु आबादी और जालौर में न्यूनतम अभिलिखित की गई । पोषकों सहित सभी पैरामीटरों में अन्य उपचारों की तुलना में वी ए एम + राइजोबियम के साथ संरोपित पी सिनरेरिया के पौधों ने बेहतर प्रदर्शन किया ।

ए एम कवक के वंश की एक्यूलोस्पोरा, ग्लोमस, स्करोसीस्टिस और स्कूटीलोस्पोरा के रूप में पहचान की गई ।

परियोजना 7 : पादप रोगजनक कवक का मानव चिकित्सा गुण : चिकित्सीय उत्पादों की जांच और पृथक्करण (ए एफ आर आई-48 / एफ पी / 2002-2006)

उपलब्धियां : कच्चे सार पत्तियों का उपयोग करके प्रोसोपिस सिनरेरिया में फ्यूजेरियम द्वारा उत्पन्न घाव के विरुद्ध घाव भरने के गुणों के लिए एलन्थस एक्सल्सा पत्ती और तने की जांच की गणना की गई । आंशिक रूप से शोधित अंशों ने फ्यूजेरियम प्रजातियों के बीजाणु अंकुरण के अवरोधन द्वारा सकारात्मक प्रभाव दर्शाया ।



वैश्विक प्रतिवेदन
2005-2006

वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : यूकेलिप्टस और डैल्बर्जिया क्लोनों का बहुस्थानिक परीक्षक (ए एफ आर आई-41/एफ जी टी बी/2002-2006)

स्थिति : गुजरात में चार विभिन्न स्थानों यथा – दीसा, रवीरालू गांधीनगर, राजपिपला में यूकेलिप्टस कमलडूलिनसिस और डैल्बर्जिया सिस्सू के बहुस्थानिक क्लोनीय परीक्षण स्थापित किए गए। ये क्लोन उत्कृष्ट जननदृव्य हैं। परवर्ती सालों में आँकड़े अभिलिखित किए। प्रारम्भिक आँकड़े वृद्धि पैरामीटरों (ऊँचाई और घेरा से.मी. में) पर अभिलिखित किए। डैल्बर्जिया सिस्सू के लिए सर्वोत्तम क्लोन जी 5, 20, 66 जी1 और 32 हैं और यूकेलिप्टस में 83, 128, 99, 32 और 93 हैं।

परियोजना 2 : शुष्क तथा अर्धशुष्क क्षेत्रों के एक महत्वपूर्ण औषधीय पादप – कॉमिफोरा का सूक्ष्म प्रवर्धन (ए एफ आर आई-42/एफ जी टी बी/2002-2006)

स्थिति : संकटापन्न कॉमिफोरा विघटी में कायिक भ्रूणोद्भव सफलतापूर्वक हासिल किया। यह भी प्रेक्षित किया गया कि 5% सान्द्रता पर सक्रियित चारकोल एक अच्छी अनुक्रिया देता है। 10 मिनट अन्तराल पर 90 धूमिकायन के साथ धूमिका कक्ष में पात्रे और पर-पात्रे दोनों जगह कठोरीकरण प्रयोग किए गए। 20 पादपों को कठोरीकृत किया। इन पादपों को कायिक भ्रूणोद्भव मार्ग साथ ही साथ बीजपत्रीय गांठ दोनों द्वारा उत्पादित किया गया।

परियोजना 3 : टेकोमेला अन्डुलाटा का आनुवंशिक सुधार (ए एफ आर आई-44/एफ जी टी बी/2002-2006)

स्थिति : नहर-सिंचित क्षेत्र और गैर सिंचित किसानों के खेत दोनों में धन वृक्ष चिह्नित किए। रोहिडा के 48 धन वृक्षों से बीज एकत्र किए। गोविन्दपुरा प्रायोगिक स्टेशन, जयपुर में रोपण लगाने के लिए भूमि का चयन किया गया।

परियोजना 4 : नीम में उच्च तेल एवं ऐजैडिरैक्टिन की जाचं (ए एफ आर आई-45/एफ जी टी बी/2002-2006)

स्थिति : गोविन्दपुरा प्रायोगिक स्टेशन, जयपुर में उच्च तेल और उच्च ऐजैडिरैक्टिन के लिए चयनित कैन्डिडेट धन वृक्षों से दो परीक्षण तैयार किए और रख-रखाव किया।

परियोजना 5 : चयनित बाजारों में चयनित प्रजातियों पर बाजार सर्वेक्षण (ए एफ आर आई-58/सिल्वि/1994-जारी)

स्थिति : तिमाही आधार पर जयपुर और अहमदाबाद के बाजारों से विभिन्न वन उपज यथा – प्रकाष्ठ, ईंधनकाष्ठ, बांस, की कीमत के संबंध में आँकड़े एकत्र किए गए। संकलन के बाद टिम्बर एवं बैम्बू ट्रेड बुलेटिन के प्रकाशन के लिए विहित प्रपत्र पर सहायक महानिदेशक (सांख्यिकी) भावाशिप, देहरादून को भेजा गया।

परियोजना 6 : गुजरात के कुछ महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों की स्टैण्ड गतिकी (ए एफ आर आई-57/सिल्वि/2001-2007)

स्थिति : यूकेलिप्टस हाइब्रिड के 30 नमूना भूखण्डों और ऐकेशिया निलोटिका के 17 में सालाना माप ली गई। आँकड़ा संकलन और भूखण्ड परिकलन पूरा किया। स्टैण्डों में आकार श्रेणी वितरण को परिभाषित करने के लिए सांख्यिकीय वितरण क्रिया प्रयुक्त की गई। पूर्ण अवशिष्ट, ची-स्ववैर और कोल्मोगोरोव-स्मिरनोव परीक्षण जैसे सांख्यिकीय परीक्षणों के आधार पर नॉर्मल एवं बीबुल वितरण की तुलना में जॉहन्सन वितरण ने बेहतर प्रदर्शन किया। ऐकेशिया निलोटिका और यूकेलिप्टस हाइब्रिड के लिए ऊँचाई वृद्धि एवं स्थल तालिका समीकरण विकसित किया। स्थल तालिका समीकरणों को विकसित करने के लिए पांच एल्जेबरिक अन्तर समीकरणों का



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

उपयोग किया गया। सामान्यीकृत गैर-रेखिक अल्पतम स्वचैर विधि को त्रुटि संरचना को ध्यान में रखने लिए उपयोग किया। बायस, जड़ औसत वर्ग त्रुटि और अकाकी के सूचना मापदण्ड को परिकलित किया और समीकरणों के प्रदर्शन को मूल्यांकित करने के लिए क्रास वेलिडेशन रीजुडअल्स का उपयोग किया गया। वर्ग विधि के गैर-रेखिक योग का उपयोग करके दो प्रजातियों के स्थल तालिका समीकरणों में विभिन्नता की जांच की गई। विश्लेषण के आधार पर, स्थल तालिका मॉडलिंग के लिए दोनों प्रजातियों हेतु सर्वोत्तम स्थूल मॉडल की संस्तुति की गई है।

परियोजना 7 : शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र की विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के संबंध में बीज गुणवत्ता सुधार पर अध्ययन (ए एफ आर आई-59 / सिल्वि / 2002-2007)

स्थिति : वर्ष के दौरान ऐकेशिया निलोटिका, प्रोसोपिस सिनरेरिया, और ऐजैडिरैक्टा इंडिका के बीज एकत्र किए और परीक्षण के लिए श्रेणीकृत और भण्डारित किया। डैल्बर्जिया सिस्सू और एलन्थस एक्सल्सा के बीच विभिन्न नमी और तापमान स्तरों पर भण्डारित किया गया और नमी तथा अंकुरणशीलता के लिए परीक्षित किया। एलन्थस एक्सल्सा में 5 प्रतिशत नमी मात्रा पर भण्डारित बीजों ने, 10 प्रतिशत नमी स्तर पर भण्डारित बीजों की अपेक्षा, महत्वपूर्ण रूप से उच्च प्रतिशत अंकुरण दिया। बीजों को अंकुरण की महत्वपूर्ण क्षति के बिना तीन साल तक सुरक्षित रूप से भण्डारित किया जा सकता है। इस प्रजाति के लिए निम्न तापमान भण्डारण उपयुक्त नहीं है। बीजों को बोरियों में भण्डारित कर सकते हैं। डैल्बर्जिया सिस्सू के भण्डारित बीजों ने कक्ष तापमान पर भण्डारण के तीन साल बाद अंकुरणक्षमता खो दी। तथापि, जब बीजों को निम्न तापमान पर भण्डारित किया गया तो 46 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त किया। कैपेरिस डीसिडुआ के तीन साल पुराने भण्डारित बीजों ने सभी उपचारों में कम प्रतिशत अंकुरण दिखाया। भण्डारित नमी मात्रा प्रतिशत अंकुरण को प्रभावित नहीं करता है। छः बीज स्रोतों से कॉमिफोरा वीघटी के बीच एकत्र किए और अंकुरित किए। बीजों को दो श्रेणियों में पृथक किया और बीज अंकुरण अध्ययनों के लिए रखा गया। सफेद की अपेक्षा काले बीज भारी हैं और 75 प्रतिशत की नमी मात्रा पर एक किलोग्राम बीज में 35000-40000 बीज होते हैं। कैलाना क्षेत्र से एकत्रित काले बीजों ने उच्च अंकुरण दर्शाया इसके बाद नाकोडा रहा।

परियोजना 8 : शुष्क तथा अर्धशुष्क क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पौधशाला प्रौद्योगिकियों का विकास (ए एफ आर आई-64 / सिल्वि / डी आर डी ए / 2002-2006)

स्थिति : शुष्क वन अनुसंधान संस्थान मॉडल पौधशाला में अन्य पर्णधारियों के लिए उन्नत रोपण स्टॉक आवश्यकतानुसार उगाया जा रहा है। औषधीय पादपों का जननदृश्य बैंक स्थापित किया गया। मोपेनी, खीजड़ी, अर्दू और रत्नजोत के पौधों की वृद्धि पर विभिन्न पात्र मिश्रणों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रयोग तैयार किए गए।

परियोजना 9 : विभिन्न प्रबंध परियोजना के साथ विदेशज एवं देशज पादप प्रजातियों की, लवण प्रभावित मृदा पर इनकी प्रदर्शन के लिए जांच (ए एफ आर आई-49 / एन डब्ल्यू एफ पी / 1997-2003)

स्थिति : रोपण के विभिन्न प्रकारों पर जीप्सम के साथ अथवा जीप्सम के बिना ए एमिनकोला के प्रदर्शन के लिए ए एमिनकोला का एक प्रायोगिक परीक्षण तैयार किया गया। विभिन्न उपचारों के लिए मूल्यांकित उत्तरजीविता प्रतिशतता रोपण के 60 महिने बाद 75 से 888 प्रतिशत तक थी। विभिन्न प्रकार के टीलों पर विदेशज और देशज वृक्ष प्रजातियों के प्रदर्शन के लिए रोपण वृद्धि के तीन उपचारों के साथ दो वृक्ष प्रजातियों ऐकेशिया कोलाई और ऐजैडिरैक्टा इंडिका के साथ परीक्षण तैयार किए और पैटर्न अभिलिखित किया। प्रबंध पद्धतियों के साथ जेड मार्शियाना और सी मॉपेनी का प्रदर्शन। दो चारा प्रजातियों यथा- जिजीफस मार्शियाना (बेर) और कॉलोफोस्पर्मम मोपेनी के साथ एक प्रायोगिक परीक्षण तैयार किया गया। कुल मिलाकर सभी मोपेनी ने बेर की अपेक्षा 64 प्रतिशत एवं 8 प्रतिशत ज्यादा छत्र एवं नियंत्रण अभिलिखित किया दोनों प्रजातियों के लिए नाइट्रोजन उपयोग ने ऊँचाई और छत्र व्यास दोनों बढ़ाया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 10 : सही फसल समय का पता लगाने के लिए कुछ शुष्क क्षेत्र औषधीय पादपों में जैविकीय रूप से सक्रिय द्वितीयक उपापचयजों का मात्रात्मक आकलन (ए एफ आर आई-50 / एन डब्ल्यू एफ पी / 2002-2007)

स्थिति : सारों में जैवसक्रिय यौगिक यथा – स्टीरोल्स, एल्केलॉयड, और फ्लेबोनॉयड उपस्थित थे। MeOH सार में एल्केलॉयड का उत्पादन गरमी में उच्चतम और स्टीरॉल का सर्दी के मौसम में उच्च था। सक्रिय द्वितीयक उपापचयजों के अध्ययन हेतु दूसरे साल केलोट्रोपिस फूल एकत्र किए।

परियोजना 11 : रोपण वन में स्टैण्ड विकास के दौरान खरपतवार गतिकी और मृदा परिवर्तन (ए एफ आर आई-35 / एफ ई डी / 2002-2006)

स्थिति : इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना के साथ-साथ नचना, सादा और रामगढ़ क्षेत्र में यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस, ऐकेशिया निलोटिका, ऐकेशिया टार्टिलिस, टेकोमेला अण्डुलाटा, प्रोसोपिस सिनरेरिया और डैल्बर्जिया सिस्सू के रोपणों में 10X10 वर्ग मीटर क्षेत्र 76 खरपतवार भूखण्ड तैयार किए गए। भूखण्ड के भीतर वृक्षों के लिए ऊँचाई और वक्षोच्चता व्यास अभिलिखित किया। मासिक खरपतवार संग्रहण किया जा रहा है। खरपतवारों को विभिन्न घटकों में पृथक किया और शुष्क भार अभिलिखित किया। इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना क्षेत्र में विभिन्न वृक्षों से सालाना खरपतवार उत्पादन (किग्रा / हैक्टेयर) ने यूकेलिप्टस – कमल्डूलिनसिस के तहत उच्चतम खरपतवार संचयन दर्शाया इसके बाद डैल्बर्जिया सिस्सू में रहा। भूखण्डों से मृदा नमूने एकत्र किए और आर्गेनिक कार्बन मात्रा के लिए विश्लेषण किया। मृदा आर्गेनिक कार्बन भण्डारण डैल्बर्जिया सिस्सू में उच्चतम पाया गया इसके बाद यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस, ऐकेशिया निलोटिका, प्रोसोपिस सिनरेरिया, ऐकेशिया टार्टिलिस और टेकोमेला अण्डुलाटा में पाया गया। मृदा और पादप नमूनों का विश्लेषण प्रगति पर है।

परियोजना 12 : शुष्क क्षेत्र की कुछ उपयुक्त नाइट्रोजन स्थायीकर प्रजातियों की, मृदा उर्वरता और जैवमात्रा के सुधार में इनके उपयोग के लिए, पहचान और जांच (ए एफ आर आई-36 / एफ ई डी / 2002-2006)

स्थिति : बीज बुआई के लिए 5x5 मी आकार की तीस क्यारियां तैयार की गईं। तैयार क्यारियों में रीन्कोसिया मिनिमा, क्लिटोरिया टर्नेटीया, म्यूकूना प्रूरिएन्सी, क्रोटेलेरिया बर्हिया और मिमोसा हमाटा के बीज बोए गए। क्यारियों से मृदा नमूने एकत्र किए और विश्लेषण किया। क्यारियों में बीजों को बोने से पहले मृदा नाइट्रोजन मात्रा आकलित की गई। मिमोसा हमाटा के लिए बफर्स और अधःस्तर का मानकीकरण पूरा किया गया। 02 मी बफर (पी एच 77) और 02 मी अधःस्तर सांद्रता पर उच्चतम नाइट्रेट अपचायक क्रिया अभिलिखित की गई। क्लिटोरिया टर्नेटीया के लिए बफर्स और अधःस्तर का मानकीकरण प्रगति पर है।

परियोजना 13 : डैल्बर्जिया सिस्सू और ऐकेशिया निलोटिका के विभिन्न समरूपों की, लवणता और सोडीयता के प्रति इनकी सहनशीलता के लिए, जांच (ए एफ आर आई-37 / एफ ई डी / 2002-2006)

स्थिति : ऐकेशिया निलोटिका और डैल्बर्जिया सिस्सू के 14 चयनित समरूपों से बीज एकत्र किए गए। राज्य वन विभाग की सहायता से थराड रेंज, पलानपुर (गुजरात) में प्रायोगिक अभिकल्प के अनुसार रोपण लगाए गए। रोपण में छः माह बाद वृद्धि और उत्तरजीविता आँकड़े अभिलिखित किए। हरीथर और लखानी से एकत्रित समरूपों में ए निलोटिका में उच्चतम उत्तरजीविता और वृद्धि अभिलिखित की गई। उच्च लवणता स्तर के कारण डैल्बर्जिया सिस्सू समरूपों की उत्तरजीविता और वृद्धि बहुत कमजोर थी। प्रायोगिक स्थल की लवणता 880 से 1088dsm⁻¹ थी। मृदा पी एच और कार्बनिक कार्बन क्रमशः 76-88 और 023-028 प्रतिशत था।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 14 : प्राकृतिक संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाने और सतत प्रबंध के लिए प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण द्वारा वानिकी प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण (निर्वचन केन्द्र की स्थापना) (ए एफ आर आई-54 / ए एफ ई / 2002-2006)

स्थिति : विस्तार एवं निर्वचन केन्द्र प्रौद्योगिकी प्रसार हेतु आगन्तुकों के लिए खुला है।

परियोजना 15 : आई जी एन पी कमाण्ड क्षेत्र में उपयुक्त बहुस्तरीय फार्म वानिकी मॉडलों का विकास (ए एफ आर आई-55 / ए एफ ई / (ए) / 2003-2008)

स्थिति : परीक्षण शुरू करने के लिए उपयुक्त स्थल चयन हेतु आई जी एन पी कमाण्ड क्षेत्र में सर्वेक्षण किया गया। किन्तु किसी उपयुक्त स्थल को अन्तिम रूप नहीं दिया जा सका। अतः परियोजना कार्यकलापों को आगामी वित्तीय वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया।

परियोजना 16 : शुष्क क्षेत्र के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य और एकीकृत कृषिवानिकी मॉडलों का विकास (ए एफ आर आई-55 / ए एफ ई(बी) / 2003-2008)

स्थिति : पूर्व में चयनित स्थल पर परियोजना के कार्यान्वयन हेतु कार्यपद्धति का पता लगाने के लिए गांव हर्ष, बिलारा, जोधपुर में क्षेत्र भ्रमण किया गया। किसानों के साथ कृषि फसलों की पारस्परिक क्रिया के साथ बागवानी एवं वन संवर्धन प्रजातियों की पसन्द को अन्तिम रूप दिया। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान पौधशाला में वन संवर्धन और बागवानी प्रजातियों के पौधे उगाने के लिए कार्यकलाप शुरू किए गए। सभी कार्यकलाप प्रगति पर है।

वर्ष 2005-2006 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : राजस्थान के शुष्क तथा अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के व्यापारिक रूप से दोहनीय औषधीय पादपों के लिए सर्वेक्षण और संवर्धनिक प्रबंध पद्धतियां (ए एफ आर आई-35 / सिल्वि 8 / एम पी बी / 2002-2005)

स्थिति : राजस्थान के 26 जिलों में औषधीय पादपों के व्यापार में शामिल 435 इकाइयों / व्यापारियों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षित जिलों की कुल आवश्यकता ने दर्शाया कि 9, 36, 110 किग्रा विभिन्न औषधीय पादपों का सालाना व्यापार होता है। औषधीय पादपों के 2724 प्रतिशत व्यापार के साथ सर्वे किए गए जिलों में जयपुर शीर्ष पर है इसके बाद जोधपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, उदयपुर और गंगानगर है। बांसवाड़ा का व्यापार अंश कुल व्यापार का 0002% है।

वर्षा पर आधारित और सींचित अवस्थाओं के तहत शुष्क क्षेत्रों में एलो वीरा (एल) वेब व बर्थ (ग्वार पाठा), एस्पेरेगस रेसीमोसस वाइल्ड (शतावरी), कैथेरेन्थस रोसस (एल) जी डॉन (सदाबहार, ओसीमम सेक्टम लिन तुलसी) और विथानिया सोमिफेरा (लिन) दूनाल (अश्वगंधा) और सेन्ना के लिए खेती पद्धतियां विकसित की गई। हमारे प्रेक्षणों ने दर्शाया कि ओसीमम सेक्टम, कैथेरेन्थस रोसस और एस्पेरेगस रेसीमोसस में 96-98 प्रतिशत उत्तरजीविता रही और विथानिया सोमिफेरा और एलोवीरा में अधिकतम मृत्यु हुई। एलोवीरा के लिए प्रारम्भिक प्रतिशत उत्तरजीविता 70 प्रतिशत थी और विथानिया सोमिफेरा के लिए 74 प्रतिशत थी। सभी प्रजातियों ने सिंचाई एवं उर्वरक उपयोग के प्रति अनुक्रिया दिखाई। गूगल के खेती परीक्षण ने दर्शाया कि या तो बीज अथवा कलमों द्वारा उगाए पादपों ने कारवाड (लवणीय स्थल) के अपेक्षा कयालाना (अच्छी मृदा) स्थल में बेहतर प्रदर्शन किया। कारवाड स्थल में 2889 सेमी की औसत ऊँचाई के विरुद्ध कयालाना में वृद्धि उच्च (औसत ऊँचाई 4837 सेमी) थी। 150 औषधीय पादपों के साथ एक जननदृव्य बैंक जोधपुर में स्थापित किया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 2 : ओरन और गोचर के सुधार के लिए वन संवर्धन चारागाह मॉडल का विकास (ए एफ आर आई-275 / सिल्वि-3 / यूनिसेफ / 2001-2003)

स्थिति : जोधपुर जिले के तुलसार और ओस्टरन गाँवों में सुधार मॉडल का विकास किया। स्थानीय घासों की बीज बुआई के साथ पी सिनरैरिया, टेकोमेला अण्डुलाटा, जिजीफस प्रजाति, कोलोफास्पर्मम मोपेनी, हार्डविकिया पिन्नाटा एवं एलन्थस एक्सल्सा जैसी देशज और चारा प्रजातियों का रोपण किया।

**वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं
(बाहर से सहायता प्राप्त)**

परियोजना 1 : जीवन सहायक प्रणालियों के विकास और सतत प्रबंध के लिए किसानों और ग्रामीण गरीबों का क्षमता निर्माण और पारि-सुग्राहीकरण (ए एफ आर आई / 156 / ए एफ ई / 2002-2007)

उपलब्धियां : नवीनतम वानिकी प्रौद्योगिकी और अन्य सम्बद्ध पारि-अनुकूल उपयोगिता परिवर्धन कार्यकलापों में पर्णधारियों, विशेषकर किसानों, वन क्षेत्र कर्मचारियों, ग्राम सेवक, पंचायत कार्यकर्ताओं, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, महिलाओं और बच्चों को शिक्षित करने और सामाजिक-आर्थिक स्तर के उत्थान के लिए वन प्रभागों के रेंज मुख्यालयों के तीन अलग-अलग स्थानों, जिसमें राजस्थान के शेष नौ रेगिस्तान जिलों, यथा - सीकर, झुंझनू, जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, चुरू, जालौर, नागौर और पाली जिलों में प्रत्येक में सभी पंचायत समितियां शामिल हैं, में राजस्थान वन विभाग के वित्तीय सहयोग के साथ फेज-II में क्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक किए गए। इन 27 प्रायोगिक एवं प्रदर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में 185 महिलाओं सहित कुल 1963 सहभागियों ने भाग लिया।



निदेशक, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, सहभागियों को सम्बोधित करते हुए



पौधशाला में प्रायोगिक प्रदर्शन



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 2 : कुछ चयनित वृक्ष प्रजातियों की जैव-अपवहनक्षमता से संबंधित अभिलक्षणिक विशेषताओं का अध्ययन (ए एफ आर आई-38 / एफ ई डी / 2004-2008)

स्थिति : प्रयोग के लिए तीन स्थलों का चयन किया गया। एफ आई जी एन पी के मसीटावाली हैड के पास है। यह स्थल 37dsm¹ से 42dsm¹ तक की अत्यधिक उच्च लवणता वाला है। अन्य स्थल निम्न लवणता अधिशासन के साथ आई जी एन पी के 1357 आर जी और अनूपगढ़ शाखा में है।

इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना की अनूपगढ़ शाखा और 1357 आर डी, आई जी एन पी मेन कैनल में नमूना भूखण्ड तैयार किए गए। राज्य वन विभाग, राजस्थान द्वारा यूकेलिप्टस कमलडूलिनसिस के रोपण लगाए गए। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने 1357 आर डी, आई जी एन पी में 2003 में (बीज स्रोत सी एस आइ आर ओ, आस्ट्रेलिया) यूकेलिप्टस प्रजाति के प्रायोगिक रोपण लगाए। तीन तिमाही के लिए वृद्धि और शारीरिक पैरामीटरों को अभिलिखित किया। 1357 आर डी प्रायोगिक स्थल में यूकेलिप्टस कमलडूलिनसिस में पादप की ऊँचाई उच्चतम थी। तथापि, छत्र फ़ैलाव एवं कॉलर घेरा ई रूडिस में उच्च था।

चार प्रजातियों यथा – यूकेलिप्टस कमलडूलिनसिस, ऐकेशिया निलोटिका, टैमेरिकस एफाइला और कैज्वारिना झूघूनियाना का रोपण किया गया। रोपण के समय पौधों की औसत ऊँचाई ऐकेशिया निलोटिका, यूकेलिप्टस कमलडूलिनसिस, टैमेरिकस एफाइला और कैज्वारिना झूघूनियाना में क्रमशः 75 सेमी, 65 सेमी, 50 सेमी और 75 सेमी थी। विश्लेषण के लिए मृदा नमूने एकत्र किए। प्रेक्षण गड्ढों से भूजल स्तर अभिलिखित किया।

मृदा और जल नमूने लेकर विश्लेषण किया। स्थल में तारबाड़ का काम पूरा किया गया। 025 सेमी, 25-50 सेमी और 50-75 सेमी मृदा गहराई पर औसत मृदा पी एच 88, 86 और 85 पाई गई। ऊपरी मृदा स्तर में वैद्युत चालकता बहुत उच्च थी। 025 सेमी मृदा परत में आर्गेनिक कार्बन भी उच्च पाया गया। मृदा अमोनिकल नाइट्रोजन (NH₄-N) और फास्फोरस क्रमशः 122 और 2273 पी पी एम था।

परियोजना 3 : राजस्थान के शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्र के लिए उपयुक्त शहरी सौन्दर्यपरक वानिकी हेतु उपयुक्त मॉडलों का विकास (ए एफ आर आई-63 / सिल्वि / यू आई टी / 2001-2006)

स्थिति : सात विभिन्न स्थानों में प्रायोगिक सड़क किनारों रोपणों के तहत उगाए गए पादपों के संबंध में वृद्धि एवं उत्तरजीविता आँकड़े अभिलिखित किए। प्रायोगिक रोपणों के तहत उगाए विभिन्न सजावटी वृक्ष प्रजातियों की औसत ऊँचाई और व्यास वृद्धि निम्न क्रम में प्रेक्षित की गई – डैल्बर्जिया सिस्सू > ऐजैडिरैक्टा इण्डिका > केसिया सियामिया > टैकोमेला अन्डुलाटा > पौगेमिया पिन्नाटा > एलिस्टोनिया स्कॉलेरिस > केसिया फिस्टूला > डीलोनिकस रीगिया।

परियोजना 4 : राजस्थान के देशज वनस्पति के लिए वृक्षवाटिका एवं वानस्पतिक उद्यान तैयार करना (ए एफ आर आई-61 / सिल्वि / 2002-2006)

स्थिति : राजस्थान और गुजरात की 84 देशज वृक्ष प्रजातियों से संबंधित पादपों को पोषित किया। वृक्षवाटिका एवं वानस्पतिक उद्यान की सुरक्षा के लिए बाउन्ड्री बनाने का काम पूरा किया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

वर्ष 2005-2006 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : राजस्थान में रोहिड़ा (टेकोमेला अन्डुलाटा) के गुणात्मक सुधार और वर्धित उत्पादन के लिए एकीकृत प्रबंध (ए एफ आर आई-65/एफ पी/एस एफ डी/2005-2007)

स्थिति : काष्ठ छेदक कीटों की तीन प्रजातियों और काष्ठ क्षयकारी कवक की दो प्रजातियों का अब तक सामना किया गया। इन कारकों की पहचान पर आगे अध्ययन प्रगति पर है। यह प्रेक्षित किया गया कि कुछ वृक्षों को छोड़कर आई जी एन पी क्षेत्र में उगाए गए रोहिड़ा रोपणों में खोखलेपन की समस्या नहीं देखी गयी।

प्रारम्भिक प्रेक्षणों ने दर्शाया कि खोखलेपन से संबंधित वृक्ष विकृति वृक्षों के मुख्य तनों में कैंकरों की संरचना के साथ शुरू हो सकती है। आयु और घेरा श्रेणी का ध्यान किए बिना 80 सेमी से अधिक के घेरा रेंज वाले वृक्षों में कैंकर संरचना की प्रतिशतता पाई गई। 121 सेमी से अधिक घेरा रेंज वाले वृक्षों में कैंकरों की अधिकतम प्रतिशतता देखी गयी।

तीन अलग-अलग रूप से प्रबन्धित वृक्षों से एकत्रित तना कलमों को विरायी धूमिकायन के तहत धूमिका पॉलीहाउस में उगाया गया। दो सप्ताह के अन्तराल में अंकुरण पर प्रेक्षण लिए। दो माह के बाद अंकुरण, आधारीय अन्तिम छोरों पर कैलस की सापेक्ष वृद्धि और जड़ प्राइमोर्डिया संरचनाओं पर अन्तिम प्रेक्षण अभिलिखित किए। कैलस संरचना दर्शाने वाली कलमों में जड़ प्राइमोर्डिया भी अभिलिखित किया।

कन्ट्रोल (आई बी ए उपचार के बिना) के साथ 1000 पी पी एम आई बी ए उपचार देने के बाद धूमिका पॉलीहाउस में तना कलमों में भी उगाई गई। उपचारित कलम और नियंत्रण के बीच अंकुरण एवं जड़ प्राइमोर्डिया संरचना में कोई खास अन्तर नहीं अभिलिखित किया गया। प्रत्येक श्रेणी के लिए बालू और वर्मिक्यूलाइट में तना कलमों उगाई गई। बर्मिक्यूलाइट में उगाई गई कलमों की तुलना में बालू में उगाने पर कैलस उत्पादित करने वाली कलमों की प्रतिशतता ठीक दुगुनी थी।



वर्षा जल संचयन उपाय (शीर्ष), अपवाह मापन उपाय (निम्न चार बाएं) और स्थल में रोपण कार्यकलाप (निम्न चार दाएं)



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

सारांश परिणाम दर्शाते हैं कि आयु, स्थल और घनत्व के आधार पर स्टैण्डों की औसत ऊँचाई 3.35 से 6.47 मी, औसत क्वाड्रेटिक व्यास 6.12 से 12.24 से.मी, प्रधान ऊँचाई 4.24 से 9.30 मी. आधारीय क्षेत्र 1.84 से 13.88 वर्ग मी प्रति हैक्टेयर, आयतन उपज 3.90 से 47.78 घन मी. प्रति हैक्टेयर; ऊँचाई बढ़ोतरी 0.20 से 0.36 मी. प्रति वर्ष, वक्षोच्चता व्यास 0.36 से 0.65 घन मी प्रति वर्ष और औसत सालाना वृद्धि 0.22 से 2.65 घन मी. प्रति हैक्टेयर प्रति वर्ष रही। कुल काष्ठ आयतन समीकरण तैयार कर वैधीकृत किया। कुल 8 समीकरणों की तुलना की गई और बायस, भविष्यवाणी की सापेक्ष त्रुटी, निर्धारण का गुणांक और अकाकी का सूचना मापदण्ड अन्तरों के आधार पर सर्वोत्तम मॉडल का चयन किया।

परियोजना 2 : राजस्थान के अरावली क्षेत्र में निष्कर्षण के लिए गैर-प्रकाष्ठ वन उपज की उपलब्धता और क्षमता की भविष्यवाणी पर अध्ययन (ए एफ आर आई-67 / सिल्वि / एस एफ डी / 2006-2008)

स्थिति : गांवों के चयन के लिए प्रारम्भिक सर्वेक्षण किए।

परियोजना 3 : अरावली रेंजो में अपवाह क्षतियों के नियंत्रण और जैवमात्रा उत्पादकता बढ़ाने में जल संचयन उपायों की क्षमता और अर्थव्यवस्था (ए एफ आर आई-39 / एफ ई डी / एस एफ डी / 2005-2008)

स्थिति : बांसवाड़ा वन प्रभाग में 0-10 प्रतिशत, 10-20 प्रतिशत और 20-30 प्रतिशत की ढालों को कवर करके एक पहाड़ी स्थल का चयन किया गया। वर्षा जल संचयन उपाय कन्टूर खाइयां, ग्रेडोनी, बाक्स खाइयां, एक नियंत्रण भूखण्ड के साथ वी-खाई हैं। पूरी तरह से यादृच्छिकीकृत ब्लॉक अभिकल्प में 700 वर्ग मी क्षेत्र के पिचहत्तर भूखण्ड (तीन ढालें ग पांच उपचार ग पांच प्रतिकृतियां) तैयार किए गए। जल प्रवाह नियंत्रित और अपवाह एकत्रित करने के लिए पादपों के साथ फिट की गई प्रवाह नियंत्रण दीवार के साथ पिचहत्तर अपवाह मापन उपाय तैयार किया गए।

पहले साल के प्रेक्षणों ने दर्शाया कि ढाल प्रवणता का मृदा पोषकों, वनस्पति स्तर एवं उनकी जैवमात्रा, मृदा जल मात्रा और सतह अपवाह क्षतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। एक ऐसे भूखण्ड, जिसमें मृदा जल मात्रा ग्रेडोनी और वी-खाई भूखण्डों की तुलना में कन्टूर खाई भूखण्डों में महत्वपूर्ण रूप से अत्यधिक (पीडो005) थी, में निम्न पहुंच सैम्पलिंग बिन्दु की 0-20 से.मी मृदा परत को छोड़कर जल क्षति और मृदा जल मात्रा पर उपचार प्रभाव खास नहीं था। सीधी ढलानों के परिणामस्वरूप उच्च जल और PO_4 -P क्षति हुई।

परियोजना 4 : बांस स्थान-निर्धारण परीक्षण परियोजना का कार्यान्वयन (ए एफ आर आई-43 / एफ जी टी बी / एन एम बी ए / 2005-2007)

स्थिति : बांसवाड़ा जिले में गौपारा में भापौर पौधशाला में तीन परीक्षण यथा - प्रजाति, जल प्रबंध और अन्तराल परीक्षण स्थापित किए गए। प्रजाति में मर्त्यता कम है, जिनमें रोपण के समय पादप यथा - बम्बूसा बाल्कुआ, डी. हैमिल्टोनी, डी स्ट्रिक्टस और बी. टुल्डा, अच्छी तरह उगे। जबकि उन पादपों में मृत ज्यादा (50 प्रतिशत और ज्यादा) है जो रोपण के समय छोटे हैं, यथा - डी. एस्पर और बी. बेम्बोस (ये ऊतक संवर्धन से भी उगाए गए हैं)। कदाचित अच्छी तरह से उगे प्रकन्द की अनुपस्थिति इनकी कमजोर उत्तरजीविता का कारण हो सकती है। बम्बूसा न्यूटन्स के मामले में, जिसमें पादप मध्यम आकार के हैं, उत्तरजीविता डी.एस्पर और बी. बम्बोस की अपेक्षा बेहतर है (मर्त्यता 11: है)। बी. जाइगेन्टीयस के मामले में, प्रकन्द नए प्ररोहों को उत्पन्न नहीं कर सका।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

परियोजना 5 : राजस्थान और गुजरात में ऊतक संवर्धन द्वारा बांसों का गुणन एवं क्षेत्र परीक्षण (ए एफ आर आई-68/एफ जी टी बी/डी बी टी/2005-2007)

स्थिति : दोनो राज्यों राजस्थान और गुजरात में स्थल पहचान किया। राजस्थान में पहचान किए गए स्थल कुशालगढ़, बांसवाड़ा, और सेरा, उदयपुर है। गुजरात में केवल एक स्थल, यथा-चरवालिया, दाहोड की पहचान की गई। टी ई आर आई से प्राप्त बम्बूसा बेम्बोस के रोपण पदार्थ (8000 टी सी पादप) और डेन्ड्रोक्लैमस स्ट्रिक्टस शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में उगाए जा रहे हैं। क्षेत्र अभिकल्प के अनुसार गड्ढे बनाने का अग्रिम कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 6 : समन्वित परियोजना अनुकूलनशीलता और तेल उत्पादन के लिए जैट्रोफा करकस का आनुवंशिक सुधार (घटक : शुष्क पर्यावरण के तहत जैट्रोफा करकस अनुवृद्धियों का प्रदर्शन) (ए एफ आर आई-69/सिल्वि/सी एस आई आर/2005-2010)

स्थिति : सत्ताईस अनुवृद्धियों के लक्ष्य के विपरीत 22 अनुवृद्धियां एकत्रित/प्राप्त की गई। हरियाणा से दो नयी अनुवृद्धियों की पहचान की गई और इनसे बीज एकत्र किए गए। तमिलनाडु (10) और केरल (10) से बीज अनुवृद्धियां एकत्र की और प्रवर्धन की प्रक्रिया में हैं। उदयपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र के बीज भी एकत्र किए और उद्गमस्थल परीक्षण के लिए व.अ.सं., भेजा गया। एक वर्ष के सिंचित परीक्षण से भी बीज एकत्र किया। जैट्रोफा के लिए कुल फल उपज/वृक्ष, बीज/फल अनुपात, बीज/गिरी अनुपात और तेल आकलन हेतु अनुकूलतम विलायक निष्कर्षण समय एवं विलायक की किस्म की गणना की गई। 17 अनुवृद्धियों के साथ प्रदर्शन परीक्षण तैयार किए। इस परियोजना के तहत तैयार किए जाने वाले सभी नए परीक्षणों के अभिकल्प को अन्तिम रूप दिया।

सारांश : परियोजनाओं की संख्या

	2005-2006 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजनाएं	07	16	—
बाहय परियोजनाएं	02	04	06
कुल	09	20	06

शिक्षा और प्रशिक्षण

शिक्षा

डॉ. जी. सिंह, प्रमुख, वन पारिस्थितिकी प्रभाग के पर्यवेक्षण में श्री रंजीत सिंह यादव को व.अ.सं. सम विश्वविद्यालय द्वारा पीएच डी डिग्री प्रदान की गई।



प्रशिक्षण

सहभागिता

अन्तर्राष्ट्रीय

1. डॉ. तरुण कान्त ने डिपार्टमेन्ट ऑफ प्लान्ट साइन्सेज, यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज, यू.के. में बायोटेक्नोलॉजी ओवरसीज एसोसिएटशिप 2003-2004, भारत सरकार, जैवप्रौद्योगिकी विभाग के तहत 16 अगस्त, 2004 से 15 अगस्त, 2005 तक एक साल का पोस्ट डॉक्टरल फ़ैलोशिप पूरा किया।
2. डॉ. वी.पी. तिवारी, वैज्ञानिक ई ने जर्मन शैक्षिक विनिमय कार्यक्रम के तहत इन्सटिट्यूट फॉर वाल्डिनवेन्टूर एण्ड वाल्डवाचस्टम, जार्ज-अगस्त यूनिवर्सिटी, गोटिन्जन (जर्मन) में 15 दिसम्बर, 2005 से 15 फरवरी 2006 तक दो माह का अध्ययन एवं शोध भ्रमण पूरा किया और "माडलिंग ग्रोथ एण्ड यील्ड इन फॉरेस्ट्री ट्री स्पीसिज" परियोजना पर कार्य किया।

राष्ट्रीय

1. श्री बलबीर सिंह, भा.व.से. ने केरल वन अनुसंधान संस्थान, पीची में सम्पन्न "उष्णकटिबंधीय वनों का प्रबंध : विषय और चुनौतियां" पर भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए पांच दिवसीय अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
2. डॉ. जी. सिंह वैज्ञानिक ई ने 11 से 16 अप्रैल 2005 तक राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद में सम्पन्न "सतत आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सहभागी प्रबंध" पर छः दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
3. कृ. सरिता मुथा, अनु. सहायक वन पारिस्थितिकी प्रभाग ने एस जी एस, इण्डिया प्राइवेट लि., नई दिल्ली द्वारा आयोजित 4 और 5 अप्रैल 2005 तक "वन प्रमाणीकरण हासिल करने की आवश्यकता प्रक्रिया और आवश्यकता" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण/कार्यशाला में भाग लिया।

आयोजित

1. राजस्थान के रेगिस्तानी जिलों में "जीवन सहायता प्रणालियों के विकास एवं सतत् प्रबंध के लिए किसान एवं ग्रामीण गरीब का क्षमता निर्माण एवं पारि-संवेदीकरण" पर तीन-तीन दिन के दस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।
2. जलसंभर प्रबंध की बहु विद्या विशेष एप्रोच, पौधशाला और रोपण तकनीकों पर निवेश, जैवउर्वरक, कृषिवानिकी मॉडल, मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकों, बागवानी, चरागाह प्रबंध, रोग एवं नाशीजीव प्रबंध आदि के रूप में उपर्युक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संस्थान के भीतर और बाहर दोनों जगहों संसाधन व्यक्तियों द्वारा बताया गया।
3. वर्षा के दौरान समय-समय पर विद्यार्थियों, गैर सरकारी संगठनों और फॉरेस्टर्स के लाभ के लिए नेहरू युवा केन्द्र, मारु वन प्रशिक्षण केन्द्र, जोधपुर में विभिन्न वानिकी विषयों पर संस्थान के तकनीकी कर्मचारियों द्वारा व्याख्यान दिया गया।
4. टी आर सी, गांधीनगर गुजरात में 25 सहभागियों को वी ए एम प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण दिया गया जिसमें ए सी एफ, आर एफ ओ, जे आर एफ और क्षेत्र सुपरवाइजर शामिल हैं। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में समय-समय पर जे आर एफ को वी ए एम के पृथक्करण और पहचान तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया गया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

सहानुबंध और सहयोग

राष्ट्रीय

1. टाटा ऊर्जा शोध संस्थान, दिल्ली
2. केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
3. जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
4. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
5. राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली
6. राष्ट्रीय बांस मिशन, नई दिल्ली
7. जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
8. जल संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली
9. राजस्थान वन विभाग
10. गुजरात वन विभाग

अन्तर्राष्ट्रीय

1. इन्स्टिट्यूट ऑफ फॉरेस्ट इन्वेन्ट्री एण्ड फॉरेस्ट ग्रोथ, जॉर्ज-अगस्त यूनिवर्सिटी, गोटिन्जन, जर्मन
2. डिपार्टमेन्ट ऑफ प्लान्ट साइंसेज, यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज, यू.के.

प्रकाशन

ब्राशुअर्स / पम्फलेट

1. के.के. चौधरी : डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005), गिलोय, टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया (विल्ड) मियर्स : दि क्लाइम्बर ऑफ लांजीविटी । विस्तार, ब्राशुअर्स ।
2. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : सर्पगंधा, रावोल्फिया सर्पेन्टाइना बेन्थ एक्स कुर्ज बिटर रूट टू बैटर हाई ब्लड प्रेशर । विस्तार ब्राशुअर्स ।
3. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : इसबगोल, प्लेन्टेगो ओवेटा (फॉर्सक) नेचुरल डीफेन्स टू डाइजेस्टिव डिसऑर्डर्स । विस्तार ब्राशुअर्स ।
4. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : भुई आंवला, फाइलेन्थस एमेरस स्कम एण्ड थान : दी वन्डर हर्ब । विस्तार ब्राशुअर्स ।
5. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : तुलसी, ओसिमम सेक्टम लिन : दी सक्रैड प्लान्ट । विस्तार ब्राशुअर्स ।



6. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : रतनजोत, जैट्रोफा करकर एल : दी बायो डीजन प्लान्ट। विस्तार ब्राशुअर्स।
7. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : मुलेठी, ग्लीसीरहिजा ग्लेब्रा लिन : स्वीट रूट स्वीटर दैन शुगर। विस्तार ब्राशुअर्स।
8. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : शतावरी, एस्पेरेगस रेसीमोसस विल्ड। विस्तार ब्राशुअर्स।
9. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : कालमेघ, एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकुलाटा (वाल) नीस. दी किंग ऑफ बिटर्स। विस्तार ब्राशुअर्स।
10. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : ग्वारपाठा, एलोवीरा (लिन.) बर्म. एफ., लिली ऑफ दी डीजर्ट। विस्तार ब्राशुअर्स।
11. के.के. चौधरी, डी.के. मिश्रा और जे.के. शुक्ला (2005) : रतनजोत, जैट्रोफा करकस एल. बायोडीजल प्लान्ट। विस्तार ब्राशुअर्स।
12. रतनजोत, जैट्रोफा कर्कस लि.।
13. सर्पगंधा, रावेलफिया सर्पेन्टिना लि. वेन्थ एक्स कुर्ज
14. कालमेघ, एन्ड्रोग्रेफिस पेनिकुलाटा बाल नीस
15. भूईं आवला, फाइलेन्थस अमेरस शुम एवं थोन
16. सफेद मूसली, क्लोरोफाइटम बोरिविलिएनम सातापउ व फरनानडिस
17. मुलैठी, ग्लाइसीराइजा ग्लैबरा लिन
18. अकाल के समय जीवन रक्षक पेड़ : कैर, कैपेरिस डेसिडुआ एडज्यू.
19. आयुर्वेदिक औषधि के लिए वरदान : अश्वगंधा, विदानिया सोमनीफेरा डुनाल
20. मारवाड़ का टीक : रोहिड़ा, टेकोमेला अन्डुलेटा सीम
21. अरेबिक गोंद का एकमात्र स्रोत : कुमर, अकेसिया सेनेगल विल्ड
22. रेगिस्तान का कल्पवृक्ष : खेजड़ी, प्रोसोपिस सिनरेरिया मैकब्र
23. कई मर्ज की एक दवा : गुग्गुल, कोम्मीफोरा विगटाई अर्न.
24. शक्तिवर्धक औषधीय गुणवाला : शतावरी, एस्पेरेगस रेसीमोसस विल्ड
25. शुष्क रेतीले क्षेत्र में मृदा कटाव व ईंधन का मुख्य स्रोत : फोग, केलिगोनम पोलीगोनाइडिस लिन.
26. आर्थिक उन्नति का आधार : सोनामुखी केसिया आंगस्टीफोलिया बहल.
27. कई बीमारियों की एक दवा : ग्वारपाठा (घृतकुमारी) एलोय वेरा लिन.



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

28. इसबगोल, प्लान्टेगो ओवेटा फोस्क
29. तुलसी, ओसिमम सेन्कटम लिन.
30. गिलोय टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया विल्ड. मियर्स

परामर्श

शहरी विकास एवं निर्धनता उपशमन मंत्रालय, नई दिल्ली के तहत भारत सरकार का एक उद्यम मैसर्स राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम लि., जिसे राजस्थान में विभिन्न स्थानों में रक्षा बलों के लिए रक्षा आवास परियोजना हेतु कार्यकारी एजेन्सी नियुक्त किया गया है, के लिए एअरफोर्स स्टेशन, जोधपुर के दो आवास निर्माण स्थलों में "भूदृश्य और वृक्षसंवर्धन कार्य" के लिए परामर्श का कार्य लिया गया।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनियां

आयोजित

1. "रेगिस्तानीकरण रोकने पर कार्यक्रम" पर एक दिवसीय कार्यशाला 06 सितम्बर 2005 को सम्पन्न हुई।
2. 20 सितम्बर 2005 को अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक आयोजित की गई।
3. "वानिकी अनुसंधान विस्तार में चुनौतियां" पर 18 और 19 अक्टूबर 2005 को दो दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
4. शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर में 28 से 30 सितम्बर 2005 तक "वानिकी शब्दावली" पर तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई, जिसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया।
5. रेगिस्तानी क्षेत्रों में रेगिस्तान विकास कार्यक्रम, सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम और एकीकृत जलसंभर विकास कार्यक्रम के अर्थपूर्ण कार्यान्वयन के लिए रणनीतियां पर 7 दिसम्बर 2005 को एक दिवसीय कार्यशाला।



उद्घाटन सत्र



तिनवारी में इको पार्क में भ्रमण



सहभागिता

1. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक ने 7 और 8 अप्रैल 2005 तक जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित नई दिल्ली में जैव ईंधन एवं जैव ऊर्जा हेतु जैवअभियांत्रिकी पर पुनर्गठित कार्यक्रम संचालन समिति की चौथी बैठक में भाग लिया।
2. डॉ. आर. एल. श्रीवास्तव, निदेशक ने 24 से 28 अप्रैल 2005 तक काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में "भारत में शुष्क क्षेत्र की रोपण में उगी अल्प-ज्ञात प्रकाष्ठों की सुरक्षा और सक्षम उपयोग - ऐकेशिया टॉर्टिलिस, प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा, और प्रोसोपिस सिनरेरिया" पर आई आर जी-36 सालाना सम्मेलन में भाग लिया।
3. डॉ. जी.सिंह, श्री एन. बाला और डॉ. पी.के. अग्रवाल ने सी ए जेड आर आई, जोधपुर में 10 और 11 मई 2005 तक मृदा विज्ञान की भारतीय समिति के जोधपुर चैप्टर द्वारा आयोजित "राजस्थान में शुष्क भूमि जैव कृषि" पर दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
4. डॉ. जी. सिंह ने पश्चिमी भारत के शुष्क तथा अर्धशुष्क भूमियों में भूमि निम्नीकरण कम करने, उत्पादकता बढ़ाने और निर्धनता घटाने के लिए एकीकृत पारितंत्र एप्रोच" नामक परियोजना के प्रस्तुतिकरण हेतु 12 मई 2005 को यू एन डी पी कार्यालय, नई दिल्ली में एक दिवसीय बैठक में भाग लिया।
5. डॉ. रंजना आर्या ने सी ए जेड आर आई, जोधपुर में 10 और 11 मई 2005 तक शुष्क क्षेत्र में जैव कृषि पर दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
6. श्री आर एल श्रीवास्तव, निदेशक, शुष्क व.अ.सं. में 8 से 10 मई 2005 तक रेगिस्तान विकास प्रौद्योगिकी पर व्याख्यान देने के लिए बिट्स, पिलानी का दौरा किया।
7. श्री आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक, शुष्क व.अ.सं. ने 11 से 13 मई 2005 तक जी ई एफ परियोजना के संबंध में यू एन डी पी कार्यालय, नई दिल्ली में बैठक में भाग लिया।
8. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव ने सी आई आई, राजस्थान द्वारा आयोजित 11 और 12 अगस्त 2005 तक जयपुर में कृषि कांक्लेव 2005 पर दो दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया और "राजस्थान की समस्या मृदाओं पर विशेष जोर देने के साथ बंजरभूमि एवं इनका प्रबंध" पर व्याख्यान दिया।
9. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक और डॉ. जी.सिंह, वैज्ञानिक ई ने राज्य वन विभाग, राजस्थान द्वारा जयपुर में 26 से 28 सितम्बर 2005 तक आयोजित "घासभूमि पारिस्थितिकी और जीन पूल संरक्षण" पर कार्यशाला में भाग लिया।
10. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने उदयपुर में 27 से 29 सितम्बर 2005 तक आई एफ एफ डी सी एवं एम के डी और इफको द्वारा आयोजित "ग्रामीण आजीविका बढ़ाकर निर्धनता को चुनौती" पर कार्यशाला में भाग लिया और एक सत्र की अध्यक्षता की।
11. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने 4 से 10 दिसम्बर 2005 तक सी आर आई डी एल ए, हैदराबाद में सम्पन्न "संस्था निर्माण एवं आजीविका प्रोत्साहन पर तल्लीनता कार्यक्रम-आंध्र प्रदेश के अनुभवों से ज्ञान" में भाग लिया और सी एस आई आर, जैट्रोफा परियोजना के तहत सी आर आई डी ए, हैदराबाद और पी ए पी लि., बंगलौर में सहयोगी संस्थानों/साझेदारों में भ्रमण किया।
12. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, भा.व.से., निदेशक, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने 18 और 19 जनवरी 2006 तक नई दिल्ली में जैव ईंधनों पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

13. डॉ. जी. सिंह और डॉ. सुनील कुमार, वैज्ञानिक डी ने गुजरात वन विभाग द्वारा 19 और 20 जनवरी 2006 तक आयोजित जी सी ई आर टी, गांधीनगर (गुजरात) में सम्पन्न "पश्चिमी क्षेत्र के लिए रेगिस्तान एवं रेगिस्तानीकरण" विषय पर क्षेत्रीय स्तर की कार्यशाला में भाग लिया।
14. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक और डॉ. यू.के. तोमर, वैज्ञानिक ई, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने 9 और 10 फरवरी 2006 तक उष्णकटिबंधीय व.अ.सं जबलपुर में सम्पन्न "वृक्ष जैवप्रौद्योगिकी : भारतीय परिदृश्य" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
15. श्री सी.जे.एस. के इमैनुअल ने राज्य कृषि विभाग द्वारा आयोजित मन्दोर कृषि स्टेशन, जोधपुर में "औषधीय एवं सुरभित पादप विकास" पर कार्यशाला में भाग लिया।
16. श्री अरविन्द आटे, उप वन संरक्षक ने 15 और 16 फरवरी 2006 तक पिंजौर, हरियाणा में "औषधीय पादपों का संरक्षण व खेती" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और "राजस्थान में औषधीय पादपों की बाजार क्षमता" पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया।
17. डॉ. जी.सिंह, प्रमुख, वन पारिस्थितिकी प्रभाग ने 30 और 31 दिसम्बर, 2005 तक गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में सम्पन्न "वानिकी विज्ञानों में आधुनिक उन्नतियां" पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया।
18. डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, निदेशक, शुष्क व.अ.सं. ने 22 फरवरी 2006 को होटल चन्द्रा इन, जोधपुर में आयल इण्डिया लि. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संसाधन संरक्षण पर हिन्दी में एक तकनीकी कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और व्याख्यान दिया।

प्रदर्शनी

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने 2 से 11 जनवरी 2006 तक जनसाधारण में संस्थान की अनुसंधान की मुख्य-मुख्य बातों एवं उपलब्धियों को प्रसारित करने के लिए जोधपुर में पश्चिमी राजस्थान हस्तशिल्प उत्सव-2006 में भाग लिया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. डॉ. जे.एस.पी. यादव, पूर्व अध्यक्ष - कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, ने 15 अप्रैल 2005 को संस्थान का दौरा किया।
2. माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, राजस्थान ने वन महोत्सव के अवसर पर 16 जुलाई 2005 को संस्थान का दौरा किया और शुष्क व.अ.सं. परिसर में एलोवीरा प्रदर्शन परीक्षण का उद्घाटन किया।
3. श्री बी.एल. आर्या, भा.प्र.से. आयुक्त, जोधपुर प्रभाग ने संस्थान का भ्रमण किया और 18 अक्टूबर 2005 को "वानिकी अनुसंधान विस्तार में चुनातियां" पर क्षेत्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया।
4. श्रीमती वीना उपाध्याय, भा.प्र.से., संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने 25 फरवरी 2006 को संस्थान का दौरा किया और शोध, कम्यूटरीकरण, प्रशासन आदि के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिकों/अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया।

विविध

16 जुलाई 2005 को राजस्थान वन विभाग, जोधपुर के सहयोग से 56वां वन महोत्सव मनाया गया।